पुणा International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-VIII
Hindi
Specimen copy
Semester-2
Year- 2022-23

पाठ -10 कामचोर

लेखिका – इस्मत चुगताई
जन्म – 15 अगस्त 1915

➢ कामचोर पाठ प्रवेश

यह कहानी कामचोर अर्थात् आलसी बच्चों की है। बच्चे अक्सर काम से जी चुराते हैं उन्हें खेलने-कूदने और मस्ती करने में ही आनंद आता है। इस कहानी में बताया गया है कि अगर सही दिशा निर्देश अर्थात् सही तरीका उन्हें न बताया जाए तो बच्चे सही तरीके से काम नहीं करते हैं अर्थात् बच्चों को उन्हें काम करने का तरीका सिखाना बहुत ही जरूरी है। काम सही तरीके से न होने से क्या-क्या परेशानियाँ घरवालों को होती है, इस पाठ में बताया गया है और बहुत ही मजेदार तरीके से बता गया है कि क्या-क्या होता है, जब उन्हें काम करने के लिए कहा जाता है।

➢ नए शब्द

1) कामचोर
2) ऊधम
3) दबैल
4) हरगिज
5) सींके
6) फरमान
7) रौंदती
8) कतार

➢ शब्दार्थ

1) वाद-विवाद – बहस
2) खुद – अपने आप
3) कामचोर – आलसी
4) ऊधम – मस्ती
5) ख्याल – सोच
6) दबैल – दब्बू
7) घमासान – भयानक
8) हरगिज – बिलकुल
9) फरमान – राजाज्ञा
10) दुहाई – कसम
11) सींके – तीलियाँ
12) कायल – मान लेना
13) रौंदती – कुचलना
14) कतार – पंक्ति

➢ अतिलघु प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न-1 बच्चे सारा दिन क्या करते थे?
उत्तर – बच्चे सारा दिन उधम मचाने के अलावा कुछ नहीं करते थे।

प्रश्न-2 अम्मा और अब्बा में वाद - विवाद के बाद क्या तय हुआ?
उत्तर – बड़ी देर के बाद विवाद के बाद यह तय हुआ कि सचमुच नौकरों को निकाल दिया जाए।

प्रश्न-3 अब्बा का शाही फरमान क्या था?
उत्तर – अब्बा का शाही फरमान था कि जो काम नहीं करेगा, उसे रात का खाना हरगिज नहीं मिलेगा।

प्रश्न-4 बच्चों ने अंत में क्या निश्चय किया?
उत्तर – बच्चों ने अंत में निश्चय किया कि अब चाहे कुछ भी हो हिलकर पानी भी नहीं पिएँगे।

प्रश्न-5 झाड़ देने से पहले जरा - सा पानी क्यों छिड़क देना चाहिए?
उत्तर - झाड़ देने से पहले जरा - सा पानी छिड़क देना इसलिए अच्छा होता है क्योंकि ऐसा करने से धूल नहीं उड़ती है।

➢ लघु प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न-1 पानी भरते समय नल पर कैसा दृश्य था?
उत्तर – पानी भरते समय नल पर घमासान मचा हुआ था। एक भी बूँद पानी का किसी के बर्तन में न आ सका क्योंकि वहाँ ठूसम – ठास हो रही थी। पहले तो धक्के चले, फिर कुहनियाँ और उसके बाद बर्तन। इस धींगामुश्ती में कुछ बच्चे कीचड़ में लथपथ भी हो गए।

प्रश्न-2 बच्चों के ऊधम मचाने के कारण घर की क्या दुर्दशा हुई?
उत्तर - बच्चों के ऊधम मचाने से घर अस्त-व्यस्त हो गया था। कालीन को झाड़ते वक्त पूरे घर में धूल भर दी गई थी। झाड़ू टूट चुकी

थी और उसकी सींके गायब थीं। चारों तरफ टूटे हुए तसले, बालटियाँ, लोटे, कटोरे बिखरे पड़े थे। घर के सारे बर्तन अस्त-व्यस्त हो गए थे। सारे घर में मुर्गियाँ ही मुर्गियाँ थीं। भेड़ें इधर - उधर दौड़ रही थीं। चाचा बेचारे तो जैसे अपनी जान बचा ही पाए थे। तरकारी वाली तो अपनी तरकारी खराब होने का मातम रो-रोकर माना रही थी। यहाँ तक कि बच्चों को नहलाने धुलाने के लिए नौकरों को पैसे देने पड़े। इन सब के कारण पारिवारिक शांति भी भंग हो गई थी। अम्मा ने तो घर छोड़ने तक का फैसला ले लिया था।

➢ दीर्घ प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न-1 भरा-पूरा परिवार कैसे सुखद बन सकता है और कैसे दुखद? कामचोर कहानी के आधर पर निर्णय कीजिए।

उत्तर - यदि सारा-परिवार मिल जुलकर कार्य करे तो घर को सुखद बनाया जा सकता है। कामों के क्षमतानुसार विभाजित करने से कहानी जैसी दुखद स्थिति से बचा जा सकता है। कार्यों को बाँटने से किसी दूसरे को काम करने के लिए कहने की जरुरत नहीं होगी और तनाव भी उत्पन्न नहीं होगा। इससे सारे घर में आपसी प्रेम का विकास होगा और खुशहाली ही खुशहाली होगी। इसके विपरीत यदि घर के सदस्य घर के कामों के प्रति बेरूखा व्यवहार रखेंगे और किसी भी काम में हाथ नहीं बटाएँगे तो सारे घर में अशांति ही फैलेगी, घर के सभी सदस्य कामचोर बन जाएँगे और अपने कामों के लिए सदैव दूसरों पर निर्भर रहेंगे। इसलिए चाहिए कि बचपन से ही बच्चों को उनके काम स्वयं करने के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि वे आत्मनिर्भर और ज़िम्मेदार व्यक्ति बन सकें।

व्याकरण विभाग

काल

क्रिया के जिस रूप से काम होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं।

काल के भेद

काल के तीन भेद होते हैं-

1. भूतकाल
2. वर्तमान काल
3. भविष्यत काल

1. भूतकाल – बीते हुए समय को भूतकाल कहते हैं।

जैसे-

- कल विद्यालय बंद था।
- बबीत ने खाना खाया।

2. वर्तमान काल – क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान समय में होने का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

- धोबी कपड़े धो रहा है।
- अक्षत बाज़ार जा रहा है।

3. भविष्यत काल – क्रिया के जिस रूप से कार्य के आगे आने वाले समय में होने का बोध हो उसे भविष्यत काल कहते हैं;

जैसे-

- हम कल विद्यालय जाएँगे।
- सुनीता अंतरिक्ष में गई।

भूतकाल के छह उपभेद हैं –

1. सामान्य भूतकाल – जब क्रिया सामान्य रूप से भूतकाल में संपन्न होती है, तब वह सामान्य भूतकाल कहलाती है; जैसे

- अक्षत ने पत्र लिखा।
- वर्षा हुई।

2. आसन्न भूतकाल – क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि क्रिया कुछ देर पहले समाप्त हुई है, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं। जैसे-

- कल वर्षा हुई थी।
- मैंने पाठ पढ़ा था।

3. पूर्ण भूतकाल – क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि क्रिया को हुए बहुत समय बीत गया है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।

4. अपूर्ण भूतकाल – क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया भूतकाल में हो रही थी, परंतु समाप्त नहीं हुई थी, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते है। जैसे-वर्षा हो रही थी।

5. संदिग्ध भूतकाल – भूतकाल की जिस क्रिया के करने या होने के संदेह का बोध हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं। जैसे-

- अजय ने खाना खाया होगा।
- बच्चे स्कूल गए होंगे।

6. हेतु हेतुमद् भूतकाल – यदि भूतकाल में क्रिया के होने या न होने पर दूसरी क्रिया का होना या न होना निर्भर करता है, उसे हेतु हेतुमद भूतकाल कहते हैं।

- यदि तुम आते तो काम पूरा हो जाता।
- यदि वर्षा रुक जाती तो बाढ़ न आती।

वर्तमानकाल के भेद – वर्तमान काल के तीन भेद हैं

1. सामान्य वर्तमान काल
2. अपूर्ण वर्तमान काल
3. संदिग्ध वर्तमान काल

1. सामान्य वर्तमान काल – क्रिया के जिस रूप से क्रिया का वर्तमान समय में सामान्य रूप से होने का पता चले उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं।

- रजत खाना खा रहा है।
- रजनीश पढ़ता है।

2. अपूर्ण वर्तमान काल – क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल में उसके पूर्ण न होने का बोध हो, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।

- कोमल नाच रही है।
- वह विद्यालय जा रहा है।

3. संदिग्ध वर्तमान काल – क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान समय में होने में संदेह का बोध हो, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं; जैसे

- अंशु आ रही होगी।
- सुनीता पढ़ रही होगी।

भविष्यत काल के भेद – भविष्यत काल के दो भेद हैं

1. सामान्य भविष्यत् काल
2. संभाव्य भविष्यत् काल

1. सामान्य भविष्यत् काल – क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का व्यापार आने वाले समय में सामान्य रूप से होगा, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं।

2. संभाव्य भविष्यत् काल – क्रिया के जिस रूप से किसी काम के भविष्य में होने की संभावना प्रकट हो, उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं।

- शायद वर्षा होगी।
- शायद वह तुम्हारे घर आए।

लेखन विभाग

अनुच्छेद

दिवाली

दीपोत्सव यानि दीपों के त्यौहार को दीपावली कहते है|जो दो शब्दों से मिलकर बना है दीप और अवली दीप का अर्थ दिये से और अवली का अर्थ पक्ति, श्रंखला या दीप माला होता है|भारत में बहुत से त्यौहार मनाये जाते हैं. दिवाली हिन्दुओं का महत्वपूर्ण त्यौहार हैं|यह प्रकाश का त्यौहार हैं. यह कार्तिक महीने में आता हैं|श्री रामचन्द्र रावण को मारने के बाद इस दिन अयोध्या लौटे थे|इसलिए हम इसे मनाते है|यह प्रकाश की अँधेरे पर विजय है अर्थात अज्ञान पर ज्ञान की विजय का प्रतीक पर्व हैं|लोग अपने मकानों व दुकानों को साफ़ करते है| वे उन्हें सजाते है|पुरुष व स्त्रियाँ, लड़के व लड़कियाँ, वृद्ध व युवा सभी प्रसन्न होते हैं|लोग मिठाइयाँ, खिलौने पटाखे व अन्य चीजे खरीदते हैं|स्त्रियाँ विशेष भोजन पकाती हैं|परिवार के सभी सदस्य साथ साथ भोजन करते हैं|रात्रि को लोग लक्ष्मी जो धन की देवी है उसकी पूजा करते हैं|दीपावली जिन्हें दिवाली और दीपों का त्यौहार भी कहा जाता है. यह हिंदुओ का मुख्य पर्व है| इसके आने का इन्तजार हम सभी को रहता है दिवाली से कुछ दिन पूर्व ही घरों की साफ़-सफाई के कार्यक्रम शुरू कर दिए जाते है|इस अवसर पर घर को लाइट्स के साथ सजाया जाता है|5 दिन तक चलने वाले इस दिवाली त्यौहार की शुरुआत धनतेरस से मानी जाती है|जो भाई दूज और गौवर्धन पूजा के साथ समाप्त होता है|हर वर्ष दिवाली दशहरे के 20 दिन बाद अक्टूबर महीने के मध्यांतर में मनाई जाती है. हिन्दू कैलेंडर के अनुसार इसे कार्तिक महीने की अमावस्या के दिन मनाया जाता है|कहते है राम जी इसी दिन रावण को मारकर अयोध्या लौटे थे| माता सीता, लक्ष्मण और श्रीराम जी के 14 वर्ष बाद दर्शन करने के बाद अयोध्यावासियों ने घी के दिए जलाकर इनका स्वागत किया| इसी परम्परा का निर्वहन करते हुए हम हर साल दीपोत्सव मनाते है|सारा शहर इस दिन रौशनी के उजाले में जगमगा में नहा जाता है दिवापली का द्रश्य बेहद मनमोहक होता है|

- **गतिविधि-** "कामचोर "कहानी का चित्र बनाए |

पाठ 11 – जब सिनेमा ने बोलना सीखा
लेखक – प्रदीप तिवारी

जब सिनेमा ने बोलना सीखा पाठ प्रवेश

'जब सिनेमा ने बोलना सीखा' अध्याय के लेखक 'प्रदीप तिवारी जी' हैं। प्रदीप तिवारी जी ने इस अध्याय में सिनेमा जगत में आए परिवर्तन को उज्जागर करने की कोशिश की है। आरम्भ में मूक फिल्में यानी आवाज रहित फिल्में बनती थी। उनमें किसी तरह की आवाज का प्रयोग नहीं होता था। इसके कुछ समय के बाद सिनेमा जगत में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आया और सवाक् फिल्मों का आरम्भ शुरू हुआ। इस अध्याय को निबंध के रूप में लिखा गया है जैसा कि इस अध्याय के नाम 'जब सिनेमा ने बोलना सीखा' के अर्थ से ही स्पष्ट होता है कि इस अध्याय में उस समय का वर्णन है जब सिनेमा में आवाज को शामिल किया गया। प्रदीप तिवारी के निबंध 'जब सिनेमा ने बोलना सीखा' में भारतीय सिनेमा के इतिहास के एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव को उजागर किया गया है। यह निबंध बिना आवाज़ के सिनेमा के आवाज़ के साथ सिनेमा में विकसित होने की कहानी बयान करता है। ऐसी फ़िल्में जिसमें आवाज भी थी, वे शिक्षा की दृष्टि की ओर से भी अर्थवान सबित हुई क्योंकि अब लोग एक और सुन सकते थे और फिल्म के मुख्य भाग में दी गई सीख को समझ कर अपने जीवन में उतार भी सकते थे।

➢ नए शब्द

1) सजीव
2) सवाक्
3) कृत्रिम
4) दौर
5) फैंटेसी
6) समीक्षकों

➢ शब्दार्थ

1) सजीव – ज़िंदा
2) इंसान – मानव
3) सवाक् – बोलती
4) दौर – समय
5) कृत्रिम – बनावटी
6)फैंटेसी – आकर्षक
7) समीक्षकों – जांच करने वाले
8) खिताब – उपाधि
9) देह – शरीर

➢ अतिलघु प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न-1 विट्ठल किन भाषाओं की फिल्मों में नायक थे?

उत्तर – विट्ठल मराठी और हिंदी भाषाओं की फिल्मों में नायक थे।

प्रश्न-2 'आलम आरा' का संगीत किस फॉर्म में रिकॉर्ड नहीं किया गया?

उत्तर – 'आलम आरा' का संगीत डिस्क फॉर्म में रिकॉर्ड नहीं किया गया।

प्रश्न-3 विट्ठल के मुकदमा लड़ने वाले वकील का क्या नाम था?

उत्तर – विट्ठल के मुकदमा लड़ने वाले वकील का नाम मोहम्मद अली जिन्ना था।

प्रश्न-4 मुकदमा जीतने से विट्ठल को क्या लाभ हुआ?

उत्तर – मुकदमा जीतने से विट्ठल पहली बोलती फिल्म में नायक बने।

प्रश्न-5 'आलम आरा' फिल्म कब बनी और सर्वप्रथम कहाँ प्रदर्शित हुई?

उत्तर - यह फिल्म 14 मार्च 1931 को मुंबई के 'मैजेस्टिक' सिनेमा में प्रदर्शित हुई।

प्रश्न-6 विट्ठल फिल्मों में लम्बे समय तक किस रूप में सक्रिय रहे?

उत्तर – विट्ठल फिल्मों में लम्बे समय तक नायक और स्टंटमैन के रूप में सक्रिय रहे।

प्रश्न-7 पाठ में लेखक ने 'आलम आरा' की तुलना किस फैंटसी फिल्म से की है?

उत्तर – पाठ में लेखक ने 'आलम आरा' की तुलना 'अरेबियन नाइट्स' नामक फैंटसी फिल्म से की है।

प्रश्न-8 सवाक फिल्मों के लिए कैसे विषय को चुना गया?

उत्तर – सवाक फिल्मों के लिए पौराणिक कथाओं, पारसी रंगमंच के नाटकों, अरबी प्रेम कथाओं को विषय के रूप में चुना गया।

प्रश्न-9 14 मार्च 1931 का भारतीय सिनेमा के इतिहास में क्यों महत्व है?

उत्तर – 14 मार्च 1931 को पहली सवाक फिल्म का प्रदर्शन हुआ था इसलिए इस दिन का भारतीय सिनेमा के इतिहास में महत्व है।

➢ लघु प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न-1 'आलम आरा' की शूटिंग के लिए कृत्रिम प्रकाश की व्यवस्था क्यों करनी पड़ी?

उत्तर – 'आलम आरा' का संगीत उस समय डिस्क फॉर्म में रिकॉर्ड नहीं किया जा सका, फिल्म की शूटिंग शुरू हुई तो साउंड के कारण ही इसकी शूटिंग रात में करनी पड़ती थी। मूक युग की अधिकतर फिल्मों को दिन के प्रकाश में शूट कर लिया जाता था, मगर आलम आरा की शूटिंग रात में होने के कारण इसमें कृत्रिम प्रकाश की व्यवस्था करनी पड़ी।

व्याकरण विभाग

मुहावरे

1. **आँखें चुराना (सामने आने से कतराना) –** परीक्षा में कम अंक लाने के कारण पुत्र पिता से आँखें चुरा रहा है।
2. **आँखें खुलना (होश आ जाना) –** जब उसे अपने पुत्र की हरकतों का पता चला, तो उसकी आँखें खुल गईं।
3. **आगा-पीछा करना (इधर-उधर होना) –** प्राचार्य के मैदान में आते ही छात्र आगा-पीछा करने लगे।
4. **आस्था हिलना (विश्वास उठना) –** आजकल सच्चाई और ईमानदारी के प्रति लोगों की आस्था हिलने लगी है।
5. **कान भरना (चुगली करना) –** ज्ञान को कान भरने की बुरी आदत है।
6. **कोई जोड़ न होना (मुकाबला न होना) –** नेहा की लिखाई का कोई जोड़ नहीं है।
7. **कातर ढंग से देखना (भय के भाव से नज़र बचाकर देखना) –** बिना कारण पिटने पर ड्राइवर मुझे कातर भाव से देखने लगा।
8. **कलई खुलना (भेद खुलना) –** पड़ोसी के घर में रोज महँगे-महँगे समान आ रहे थे। अचानक एक दिन पुलिस के आने से उसकी सारी कलई खुल गई।
9. **घी के दिए जलाना (खुशियाँ मनाना) –** बेटे के आई. ए. एस. बनने पर माँ-बाप ने घी के दिए जलाए।
10. **नौ-दो ग्यारह होना (भाग जाना) –** चोर किमती सामान उड़ाकर नौ-दो ग्यारह हो गया।
11. **पानी-पानी होना (अत्यंत लज्जित होना) –** मिलावट खोरी करते हुए रंगे हाथ पकड़े जाने पर रजत पानी-पानी हो गया।
12. **लाल-पीला होना (क्रोध करना) –** वार्षिक परीक्षा में पुत्र के फेल होने से पिता जी लाल-पीले होने लगे।
13. **हाथ मलना (पछताना) –** अभी समय रहते परिश्रम कर लो, नहीं तो बाद में पछताना पड़ेगा।

लेखन विभाग

'ज्योति घड़ी' बनाने वाली कंपनी के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

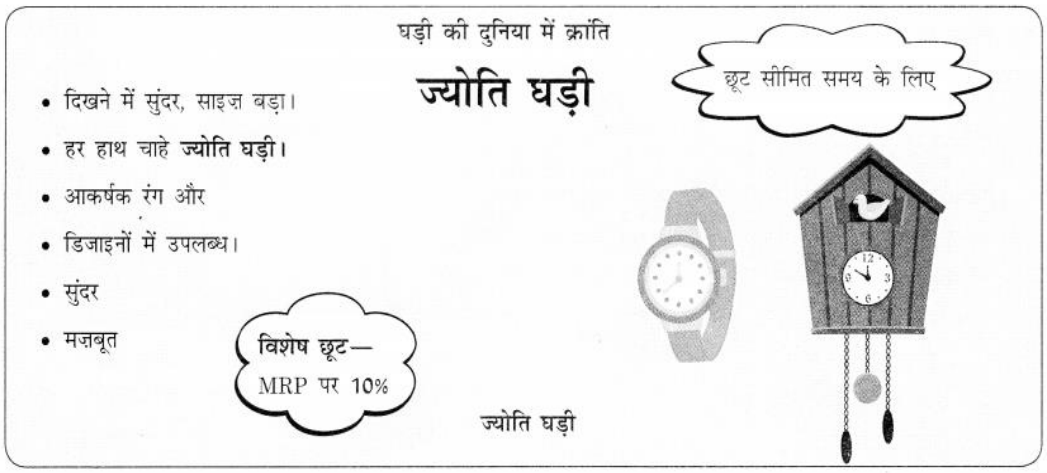

कविता- 12
सुदामा चरित

➢ सुदामा चरित कविता प्रवेश

'सुदाम चरित्र' कृष्ण और सुदाम पर आधारित एक बहुत सुन्दर रचना है। इसके कवि नरोत्तम दास जी हैं, नरोत्तम दास जी ने इस रचना को दोहे के रूप में प्रस्तुत किया है और ऐसा लगता है जैसे दोहा न हो कर श्री कृष्ण और सुदामा की कथा पर आधारित नाटक प्रस्तुत हो रहा है। 'सुदामा चरित' के पदों में नरोत्तम दास जी ने श्री कृष्ण और सुदामा के मिलन, सुदामा की दीन अवस्था व कृष्ण की उदारता का वर्णन किया है। सुदामा जी बहुत दिनों के बाद द्वारिका आए। कृष्ण से मिलने के लिए कारण था, उनकी पत्नी के द्वारा उन्हें जबरदस्ती भेजा जाना। उनकी अपनी कोई इच्छा नहीं थी। बहुत दिनों के बाद दो मित्रों का मिलना और सुदामा की दीन अवस्था और कृष्ण की उदारता का वर्णन भी किया गया है। किस तरह से उन्होंने मित्रता धर्म निभाते हुए सुदामा के लिए उदारता दिखाई, वह सब किया जो एक मित्र को करना चाहिए। साथ ही में उन्होंने श्री कृष्ण और सुदामा की आपस की नोक-झोक का बड़ी ही कुशलता से वर्णन किया है। इसमें उन्होंने यह भी दर्शाया है कि श्री कृष्ण कैसे अपने मित्रता धर्म का पालन बिना सुदामा के कहे हुए उनके मन की बात जानकर कर देते हैं। मित्र का यह सबसे प्रथम कर्तव्य रहता है कि वह अपनी मित्र के बिना कहे उसके मन की बात और उसकी अवस्था को जान ले और उसके लिए कुछ करें और उदारता दिखाऐं यही उसकी महानता है।

➢ नए शब्द

1) सीस
2) पगा
3) झगा
4) द्वार
5) द्विज दुर्बल
6) वसुधा
7) अभिरामा
8) कंटक
9) चाँपि
10) ठेलि

➢ शब्दार्थ

1) सीस – सिर
2) पगा – पगड़ी
3) झगा – कुरता
4) तन – शरीर
5) द्वार – दरवाजा
6)द्विज दुर्बल – दुर्बल ब्राहमण
7) रह्यो चकिसो – चकित
8) वसुधा – धरती
9) अभिरामा – सुन्दर
10) पूछत – पूछना
11) दीनदायल – प्रभु कृष्ण
12) धाम – स्थान
13) पग – पाँव
14) कंटक – काँटा
15) पुनि जोए – निकालना
16) सखा – मित्र
17) चाँपि – छिपाना
18) ठेलि – भेजना
19) धरौ – रखना
20) पर्याउे – अनजान

➢ प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई?

उत्तर – सुदामा की दीनदशा को देखकर श्रीकृष्ण को बहुत दुख हुआ। दुख के कारण श्री कृष्ण की आँखों से आँसू बहने लगे। उन्होंने सुदामा के पैरों को धोने के लिए पानी मँगवाया। परन्तु उनकी आँखों से इतने आँसू निकले की उन्ही आँसुओं से सुदामा के पैर धुल गए।

प्रश्न-2 "पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।" पंक्ति में वर्णित भाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर – प्रस्तुत दोहे में यह कहा गया है कि सुदामा की दीनदशा को देखकर श्रीकृष्ण व्याकुल हो उठे। श्रीकृष्ण ने सुदामा के आगमन पर उनके पैरों को धोने के लिए परात में पानी मँगवाया परन्तु सुदामा की दुर्दशा देखकर श्रीकृष्ण को इतना कष्ट हुआ कि वे स्वयं रो पड़े और उनके आँसुओं से ही सुदामा के पैर धुल गए।

प्रश्न-3 अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नहीं खोज पाए तब उनके मन में क्या-क्या विचार आए?

उत्तर - जब सुदामा अपने गाँव पहुँचे तो वहाँ का दृश्य पूरी तरह से बदल चुका था। अपने सामने आलीशान महल, हाथी घोड़े, बाजे गाजे, आदि देखकर सुदामा को लगा कि वे रास्ता भूलकर फिर से द्वारका पहुँच गए हैं। थोड़ा ध्यान से देखने पर सुदामा को समझ

में आया कि वे अपने गाँव में ही हैं। वे लोगों से पूछते हैं लेकिन अपनी झोपड़ी को खोज नहीं पाते हैं।

प्रश्न-4 द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा मार्ग में क्या-क्या सोचते जा रहे थे? वह कृष्ण के व्यवहार से क्यों खीझ रहे थे? सुदामा के मन की दुविधा को अपने शब्दों में प्रकट कीजिए।

उत्तर – सुदामा जिस उम्मीद से कृष्ण से मिलने गये थे, उसका कुछ भी नहीं हुआ। कृष्ण के पास से वे खाली हाथ लौट रहे थे। लौटते समय सुदामा थोड़े खिन्न भी थे और सोच रहे थे कि कृष्ण को समझना मुश्किल है। एक तरफ तो उसने इतना सम्मान दिया और दूसरी ओर मुझे खाली हाथ लौटा दिया। मैं तो जाना भी नहीं चाहता था, लेकिन पत्नी ने मुझे जबरदस्ती कृष्ण से मिलने भेज दिया था। जो अपने बचपन में थोड़े से मक्खन के लिए घर-घर भटकता था उससे कोई उम्मीद करना ही बेकार है।

व्याकरण विभाग

समास

दो या दो से अधिक शब्दों को संक्षिप्त करके नया शब्द बनाने की प्रक्रिया देने की विधि समास कहलाती है। यानी समास शब्द का अर्थ है- संक्षेप अर्थात छोटा करना; जैसे-रसोई के लिए घर के स्थान पर रसोईघर' कहना। कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ प्रकट करना 'समास' को मुख्य उद्देश्य है।

समस्त पद – समास की प्रक्रिया के बाद जो नया शब्द बनता है उसे सामासिक पद या समस्त पद कहते हैं।

समास-विग्रह – समस्त पद को फिर से पहले जैसी स्थिति में लाने की प्रक्रिया समास-विग्रह कहलाती है।

1. द्वन्द्व समास
2. द्विगु समास
3. तत्पुरुष समास
4. कर्मधारय समास
5. अव्ययीभाव समास
6. बहुव्रीहि समास

1. द्वन्द्व समास

जिस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों ही प्रधान हों अर्थात् अर्थ की दृष्टि से दोनों का स्वतन्त्र अस्तित्व हो और उनके मध्य संयोजक शब्द का लोप हो तो द्वन्द्व समास कहलाता है;

जैसे

- माता-पिता = माता और पिता
- राम-कृष्ण = राम और कृष्ण
- भाई-बहन = भाई और बहन
- पाप-पुण्य = पाप और पुण्य
- सुख-दुःख = सुख और दुःख

2. द्विगु समास

जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो, द्विगु समास कहलाता है।

जैसे-

- नवरत्न = नौ रत्नों का समूह
- सप्तदीप = सात दीपों का समूह
- त्रिभुवन = तीन भुवनों का समूह
- सतमंजिल = सात मंजिलों का समूह

3. तत्पुरुष समास

जिस समास में पूर्वपद गौण तथा उत्तरपद प्रधान हो, तत्पुरुष समास कहलाता है |

मतदाता = मत को देने वाला

- गिरहकट = गिरह को काटने वाला
- जन्मजात = जन्म से उत्पन्न
- मुँहमाँगा = मुँह से माँगा
- सत्याग्रह = सत्य के लिए आग्रह
- धनहीन = धन से हीन
- जन्मान्ध = जन्म से अन्धा
- भारतरत्न = भारत का रत्न

4. कर्मधारय समास

जिस समास में पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य हो, कर्मधारय समास कहलाता है। इसमें भी उत्तरपद प्रधान होता है; जैसे

- कालीमिर्च = काली है जो मिर्च
- नीलकमल = नीला है जो कमल
- पीताम्बर = पीत (पीला) है जो अम्बर
- चन्द्रमुखी = चन्द्र के समान मुख वाली
- सद्गुण = सद् हैं जो गुण

5. अव्ययीभाव समास

जिस समास में पूर्वपद अव्यय हो, अव्ययीभाव समास कहलाता है। यह वाक्य में क्रिया-विशेषण का कार्य करता है; जैसे-

- यथास्थान = स्थान के अनुसार
- आजीवन = जीवन-भर
- प्रतिदिन = प्रत्येक दिन
- यथासमय = समय के अनुसार

6. बहुव्रीहि समास

जिस समास में दोनों पदों के माध्यम से एक विशेष (तीसरे) अर्थ का बोध होता है, बहुव्रीहि समास कहलाता है; जैसे

- महात्मा = महान् आत्मा है जिसकी अर्थात् ऊँची आत्मा वाला।
- नीलकण्ठ = नीला कण्ठ है जिनका अर्थात् शिवजी।
- लम्बोदर = लम्बा उदर है जिनका अर्थात् गणेशजी।
- गिरिधर = गिरि को धारण करने वाले अर्थात् श्रीकृष्ण।
- मक्खीचूस = बहुत कंजूस व्यक्ति

लेखन विभाग

अपने क्षेत्र में बढ़ती अपराधवृत्ति तथा चोरियों की घटनाओं के बारे में क्षेत्र के थाना अध्यक्ष को पत्र लिखिए।

थानाध्यक्ष महोदय
थाना लोनी, गाजियाबाद
दिनांक ..
विषय – अंकुर विहार क्षेत्र में बढ़ते अपराधों के संबंध में
मान्यवर

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान अंकुर विहार क्षेत्र में बढ़ते जा रहे अपराधों तथा चोरियों की घटनाओं की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। पिछले कुछ दिनों से इस क्षेत्र में अपराधों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार, दिन दहाड़े चोरी की घटनाएँ, महिलाओं का पर्स या चेन झपट लेना जैसी घटनाओं के कारण आम नागरिक परेशान है।सबके मन में असुरक्षा का भय व्याप्त हो गया है। मान्यवर, आप जिस क्षेत्र से स्थानांतरित होकर इस थाने में आए हैं, वहाँ आपकी छवि एक कर्तव्यनिष्ठ एवं ईमानदार पुलिस अफ़सर के रूप में थी। इस क्षेत्र के निवासियों को पूर्ण विश्वास है कि आप शीघ्र ही अपराध वृत्ति की इन घटनाओं पर अंकुश लगाने में समर्थ होंगे।

आपसे अनुरोध है कि आप रात्रि में गश्त बढ़ा दें तथा अपने अधीन कार्यरत पुलिसकर्मियों को अपराधियों से निपटने के लिए कड़े निर्देश दें।
सधन्यवाद
भवदीय
आयुष रंजन
अध्यक्ष, आर० ए० डब्ल्यू० अंकुर विहार

- **गतिविधि-**श्री कृष्ण और सुदामा का चित्र बनाए अथवा लगाए|

पाठ 13
जहाँ पहिया है

➢ जहाँ पहिया है पाठ प्रवेश

"जहाँ पहिया है" पाठ के लेखक "पालगम्मी साईनाथ जी" हैं। पालगम्मी साईनाथ जी इस लेख के द्वारा एक साईकिल आंदोलन की बात करते हैं और तमिलनाडू के क्षेत्र में प्रसिद्ध जिले में किस तरह से महिलाऐं साइकिल के पहिऐ को एक आंदोलन का रूप देती हैं और किस तरह से वह स्वतंत्र होती हैं। अपने घर और सामाज से बाहर निकलकर आत्मनिर्भर बनती हैं। साईकिल का पहिया एक साधान के रूप में प्रस्तुत होता है और उसका उपयोग होता है एक बहुत ही बड़े आंदोलन के रूप में जहाँ पर पुरुष प्रधान सामाज में पहले स्त्रियों को किसी भी तरह की स्वतंत्रता नहीं थी, कोई भी काम करने की या घर से बाहर जाकर कमाने की। लेकिन इस पहिये के ही द्वारा उनमें आत्मनिर्भरता जागी और उन्होंने अपने काम स्वंय करने आंरभ किए, अब वे बिलकुल स्वतंत्रता से अपने कार्य करती हैं और उनमें एक नई आज़ादी का अनुभव या संचार हुआ है।

➢ नए शब्द

1) चौंकने
2) नवसाक्षर
3) स्वाधीनता
4) अभिव्यक्त
5) प्रतीक
6) फब्तियाँ

➢ शब्दार्थ

1) चौंकने – हैरानी
2) नवसाक्षर – नयी पढ़ी लिखी
3) स्वाधीनता – आज़ादी
4) गतिशीलता – प्रगति
5) अभिव्यक्त – प्रकट
6) प्रतीक – निशानी
7) फब्तियाँ – ताने
8) अगुआ – आगे चलने वाला

➢ अतिलघु प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न-1 'पुडुकोट्टई' किस राज्य में है?

उत्तर – 'पुडुकोट्टई' तमिलनाडु राज्य में है।

प्रश्न-2 'पुडुकोट्टई' की लगभग कितनी महिलाओं ने साइकिल चलाना सीख लिया है?

उत्तर – अगर दस वर्ष से कम उम्र की लड़कियों को अलग कर दें तो यहाँ ग्रामीण महिलाओं के एक चौथाई हिस्से ने साइकिल चलाना सीख लिया है।

प्रश्न-3 साइकिल को विनम्र सवारी क्यों कहा गया है?

उत्तर – साइकिल बिना ईंधन के और बिना शोरगुल के चलती है। यह पर्यावरण को दूषित भी नहीं करती है। रास्ता कैसा भी हो यह चलने के लिए तैयार रहती है। इन्हीं कारणों से साइकिल को विनम्र सवारी कहा गया है।

प्रश्न-4 प्रारंभ में इस आंदोलन को चलाने में कौन-कौन सी बाधा आई?

उत्तर – प्रारंभ में लोगों ने साइकिल चलाने वाली महिलाओं पर फब्तियाँ कसीं। लोगों ने उनके उत्साह को तोड़ने का बहुत प्रयास किया। लेड़ीज साइकिल पर्याप्त संख्या में उपलब्ध न होने के कारण महिलाओं को जेंटस साइकिलें खरीदनी पड़ती थी।

प्रश्न-5 साइकिल चलाने से फातिमा और पुडुकोट्टई की महिलाओं को 'आज़ादी' का अनुभव क्यों होता होगा?

उत्तर – साइकिल चलाने से फातिमा और पुडुकोट्टई की महिलाओं को 'आज़ादी' का अनुभव इसलिए होता होगा क्योंकि वह कहीं भी जाने के लिए किसी पर निर्भर नहीं थी।

प्रश्न-6 साइकिल चलाना ग्रामीण महिलाओं के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों हैं। पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर – साइकिल चलाना ग्रामीण महिलाओं के लिए इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि साइकिल चलाने से वह स्वतंत्र महसूस करती हैं। वह कई घरेलू कार्य इसकी मदद से कम समय में कर लेती हैं। वह कहीं जाने के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहती।

प्रश्न-7 1992 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर पुडुकोट्टई की महिलाओं ने किस प्रकार लोगों को हक्का - बक्का कर दिया?

उत्तर – 1992 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर हैंडल पड़ झाड़ियाँ लगाए, घंटियाँ बजाते हुए साइकिल पर सवार 1500 महिलाओं ने पुडुकोट्टई में तूफ़ान ला दिया। महिलाओं की साइकिल चलाने की इस तैयारी ने यहाँ रहनेवालों को हक्का - बक्का कर दिया।

➢ दीर्घ प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न-1 'साइकिल आंदोलन' से पुडुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में कौन-कौन से बदलाव आए हैं?

उत्तर – इस आंदोलन ने महिलाओं को बहुत आत्मविश्वास प्रदान किया है। इससे उनके आय में वृद्धि हुई है। यहाँ की कुछ महिलाएँ अलग - बगल के गाँवों में कृषि संबंधी अथवा अन्य उत्पाद बेच आती हैं। साईकिल की वजह से बसों के इंतज़ार में व्यय होने वाला उनका समय बच जाता है। महिलाओं को कार्य पर जाने के लिए बस का इंतज़ार नहीं करना पड़ता। उन्हें घर से निकलने के लिए अपने पति, भाई, पिता या बेटों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। वह बहुत सारे घरेलू कार्य स्वंय कर पाती हैं। कार्य हो जाने पर, घर जल्दी पहुँचने से उन्हें आराम का समय भी मिल जाता है।

व्याकरण विभाग

वाक्य संबंधी अशुधियाँ

शुद्ध और अशुद्ध वाक्य हिंदी में – अशुद्ध वाक्यों का शोधन करें

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
दस लड़की पढ़ रही हैं।	दस लड़कियाँ पढ़ रही हैं।
श्याम ने मुझे आगरा दिखाई।	श्याम ने मुझे आगरा दिखाया।
लता बड़ा मीठा गाता है।	लता बड़ा मीठा गाती है।
महादेवी वर्मा बड़ी विद्वान हैं।	महादेवी वर्मा बड़ी विदुषी हैं।
मैंने हँस पड़ा।	मैं हँस पड़ा।
मेरे को घर जाना है।	मुझे घर जाना है।
यमुना के अंदर पानी भरा है।	यमुना में पानी भरा है।
जितनी करनी वैसी भरनी।	जैसी करनी वैसी भरनी।
गुफ़ा में बड़ा अंधेरा है।	गुफ़ा में घना अंधेरा है।

भेड़ और बकरियाँ चर रही हैं।	भेड़ और बकरियाँ चर रहे हैं।
आप वहाँ अवश्य जाओ।	आप वहाँ अवश्य जाइए।
शत्रु डर कर दौड़ गया।	शत्रु डर कर भाग गया।
मैंने अपनी कलम मेरे भाई को दे दी।	मैंने अपनी कलम अपने भाई को दे दी।

लेखन विभाग

आप आदर्श विद्यालय धनबाद के उपप्रधानाचार्य शैलेंद्र सिंह हैं। आगामी सत्र के लिए विद्यालय के हाउस, खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा अनुशासन व्यवस्था के लिए कैप्टन आदि के चुनाव की सूचना देते हुए एक सूचना लिखिए।

आदर्श विद्यालय, धनबाद (झारखंड)

सूचना

दिनांक: 22 मई, 20..

विद्यालय के लिए विभिन्न कैप्टन का चुनाव

विद्यालय, हाउस खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा अनुशासन व्यवस्था में योगदान देने के इच्छुक छात्रों को सूचित किया जाता है कि इच्छुक छात्र अपने नाम अधोहस्ताक्षरकर्ता को दिनांक 30 मई तक सौंप दें। चयन के लिए साक्षात्कार की सूचना 5 जून को दी जाएगी।

शैलेंद्र सिंह
उपप्रधानाचार्य

गतिविधि-

पाठ 14
"अकबरी लोटा"

लेखक – अन्नपूर्णानन्द वर्मा
जन्म – 21 सितंबर 1895 (काशी, उत्तर प्रदेश)

➢ अकबरी लोटा पाठ प्रवेश

अन्नपूर्णानन्द की कहानी "अकबरी लोटा" एक हास्य पूर्ण कहानी है। लेखक ने कहानी को बहुत ही रोचंक तरीके से प्रस्तुत किया गया है और साथ के साथ बताया गया है कि परेशानी के समय में परेशान न होकर समझदारी से किस तरह से एक समस्या का हल निकाला जा सकता है और दूसरी बात इस कहानी में यह भी बताया गया है कि एक सच्चा मित्र ही मित्र के काम आता है और उसके लिए बहुत कुछ कर गुजर जाता है। कहानी के माध्यम से लेखक हमें सीख देना चाहता है कि सही वक़्त पर सही समझ का उपयोग करना कितना जरुरी है। इस कहानी के मुख्य पात्र हैं – लाला झाऊलाल और उनके मित्र पंड़ित बिलवासी मिश्र जी।

➢ नए शब्द

1) प्रतिष्ठा
2) विपदा
3) अदब
4) मुँडेर
5) ओझल
6) कोष
7) संदूक

➢ शब्दार्थ

1) रोब – अकड़
2) प्रतिष्ठा – इज्जत
3) दुम – पूंछ
4) विपदा – मुसीबत
5) खुक्ख – खाली हाथ
6) प्रकट – उपस्थित
7) अदब – सम्मान
8) मुँडेर – किनारा
9) वेग – गति
10) ओझल – गायब
11) ईजाद – खोज
12) हल्ला – शोर
13) कोष – खजाना
14) मॉडल – प्रतिरूप
15) संदूक – बक्सा

➢ अतिलघु प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न-1 अंग्रेज़ व्यक्ति ने लोटा कितने में खरीदा?
उत्तर – अंग्रेज़ व्यक्ति ने लोटा पाँच सौ रूपए में खरीदा।

प्रश्न-2 न्यूटन कौन थे?
उत्तर – न्यूटन इंग्लैंड के एक वैज्ञानिक थे जिन्होंने गुरुत्वाकर्षण का नियम और गति के सिद्धांत की खोज की थी।

प्रश्न-3 जब अंग्रेज़ व्यक्ति पर लोटा गिरा तब वह कहाँ था?
उत्तर – जब अंग्रेज़ व्यक्ति पर लोटा गिरा तब वह एक दुकान से पीतल की कुछ पुरानी मूर्तियाँ खरीद रहा था।

प्रश्न-4 गली में ज़ोर का हल्ला क्यों हो रहा था?
उत्तर – गली में ज़ोर का हल्ला इसलिए हो रहा था क्योंकि लाला जी के हाथ से जल का भरा हुआ लोटा छूट कर नीचे किसी व्यक्ति के पैर पर गिर गया था।

प्रश्न-5 अगर बिलवासी जी लाला जी की मदद नहीं करते तब क्या होता?
उत्तर – अगर बिलवासी जी लाला जी की मदद नहीं करते तब भी किसी न किसी तरह लाला जी रुपयों का इंतज़ाम जरूर करते क्योंकि यह उनकी प्रतिष्ठा का सवाल था।

प्रश्न-6 बिलवासी जी ने अपनी पत्नी के गले से सिकड़ी क्यों निकाली?
उत्तर – बिलवासी जी ने अपनी पत्नी के गले से सिकड़ी इसलिए निकाली क्योंकि उसमें लगी ताली से वह संदूक खोलना चाहते थे ताकि ढाई सौ रूपये वापस रख सकें।

➢ लघु प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न-1 यदि बिलवासी की योज़ना अंग्रेज़ को पता चल जाती तो क्या होता?

उत्तर – यदि बिलवासी की योज़ना अंग्रेज़ को पता चल जाती तो लाला जी की पत्नी के लिए रुपयों का प्रबंध नहीं हो पाता और अंग्रेज़ उन दोनों को धोखा देने के आरोप में जेल भी भिजवा सकता था

प्रश्न-2 "इस भेद को मेरे सिवाए मेरा ईश्वर ही जानता है। आप उसी से पूछ लीजिए। मैं नहीं बताँऊंगा।" बिलवासी जी ने यह बात किससे और क्यों कही? लिखिए।

उत्तर – 'बिलवासी' जी ने यह बात 'लाला झाऊलाल' से कही क्योंकि जो वो रूपये लाए थे उसके पीछे कुछ ऐसी बात थी जिसे वे किसी को बताना नहीं चाहते थे। बात यह थी कि बिलवासी जी ने लाला झाऊलाल की मदद करने के लिए अपनी पत्नी के संदूक से चोरी करके रूपयों का प्रबंध किया था।

प्रश्न-3 "उस दिन रात्रि में बिलवासी जी को देर तक नींद नहीं आई।" समस्या झाऊलाल की थी और नींद बिलवासी की उड़ी तो क्यों?

उत्तर – "बिलवासी" जी ने अपने मित्र "लाला झाऊलाल" की सहायता करने के लिए अपनी पत्नी के संदूक से रूपए चुराए थे। इसीलिए "बिलवासी" जी अपनी पत्नी के सोने की प्रतीक्षा कर रहे थे ताकि वे अपनी पत्नी के गले से सिकड़ी निकल सकें और उसमें लगी ताली से संदूक खोल कर चुपचाप पैसे वापस रख सकें। यही कारण था कि उन्हें उस रात देर तक नींद नहीं आ रही थी।

➢ दीर्घ प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न-1अंग्रेज़ के सामने बिलवासी जी ने झाऊलाल को पहचानने तक से क्यों इनकार कर दिया था? आपके विचार से बिलवासी जी ऐसा अजीब व्यवहार क्यों कर रहे थे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – परिस्थिति देखकर बिलवासी जी के दिमाग में लाला झाऊलाल की समस्या को हल करने का उपाए आया। वे अपनी इस योजना को पुरी करना चाहते थे जिससे वे लाला जी के लिए पैसों का इंतज़ाम कर सकें। अगर वो लाला जी को पहचान लेते तो उनकी योजना विफल हो जाती, इसलिए वे ऐसा अजीब व्यवहार कर रहे थे जिससे अंग्रेज़ का क्रोध शांत हो जाए और उसे ज़रा भी संदेह न हो कि लाला झाऊलाल और वो एक दूसरे से परिचित हैं।

व्याकरण विभाग

वाच्य की परिभाषा

- क्रिया के जिस रूपान्तर से यह ज्ञात हो कि वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का प्रधान विषय कर्ता, कर्म अथवा भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।

वाच्य के भेद

उपर्युक्त प्रयोगों के अनुसार वाच्य के तीन भेद हैं-

(1) कर्तृवाच्य (Active Voice)
(2) कर्मवाच्य (Passive Voice)
(3) भाववाच्य (Impersonal Voice)

(1) कर्तृवाच्य (Active Voice)- क्रिया के उस रूपान्तर को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो।
सरल शब्दों में- क्रिया के जिस रूप में कर्ता प्रधान हो, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।
उदाहरण के लिए-
रमेश केला खाता है।
दिनेश पुस्तक पढ़ता है।
उक्त वाक्यों में कर्ता प्रधान है तथा उन्हीं के लिए 'खाता है' तथा 'पढ़ता है' क्रियाओं का विधान हुआ है, इसलिए यहाँ कर्तृवाच्य है।

(2) कर्मवाच्य (Passive Voice)- क्रिया के उस रूपान्तर को कर्मवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध हो।
सरल शब्दों में- क्रिया के जिस रूप में कर्म प्रधान हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।
उदाहरण के लिए-
कवियों द्वारा कविताएँ लिखी गई।
रोगी को दवा दी गई।

उससे पुस्तक पढ़ी गई।
उक्त वाक्यों में कर्म प्रधान हैं तथा उन्हीं के लिए 'लिखी गई', 'दी गई' तथा 'पढ़ी गई' क्रियाओं का विधान हुआ है, अतः यहाँ कर्मवाच्य है। यहाँ क्रियाएँ कर्ता के अनुसार रूपान्तररित न होकर कर्म के अनुसार परिवर्तित हुई हैं। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि अँगरेजी की तरह हिन्दी में कर्ता के रहते हुए कर्मवाच्य का प्रयोग नहीं होता; जैसे- 'मैं दूध पीता हूँ' के स्थान पर 'मुझसे दूध पीया जाता है' लिखना गलत होगा। हाँ, निषेध के अर्थ में यह लिखा जा सकता है- मुझसे पत्र लिखा नहीं जाता; उससे पढ़ा नहीं जाता।

(3) भाववाच्य (Impersonal Voice)- क्रिया के उस रूपान्तर को भाववाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में क्रिया अथवा भाव की प्रधानता का बोध हो।

दूसरे शब्दों में- क्रिया के जिस रूप में न तो कर्ता की प्रधानता हो न कर्म की, बल्कि क्रिया का भाव ही प्रधान हो, वहाँ भाववाच्य होता है।
उदाहरण के लिए-
मोहन से टहला भी नहीं जाता।
मुझसे उठा नहीं जाता।
धूप में चला नहीं जाता।

लेखन विभाग

किसी क्षेत्र में कृषि योग्य भूमि पर फैक्ट्रियाँ लगाई जा रही हैं। इससे किसानों की भूमि और रोटी-रोजी छिन रही है। इस संबंध में दो मित्रों की बातचीत को संवाद रूप में लिखिए।
अमन – अरे! श्याम, कहाँ से चले आ रहे हो?
श्याम – अपने मित्र के घर गया था, जो नहर के उस पार वाले गाँव में रहता है।
अमन – क्यों, क्या ज़रूरत आ गई थी?
श्याम – उस गाँव के पास कुछ फैक्ट्रियाँ लगाए जाने की योजना है। वहाँ के किसानों की भूमि अधिगृहीत की जा रही है।
अमन – देश के विकास के लिए फैक्ट्रियों की स्थापना ज़रूरी है।
श्याम – वह तो है पर क्या कभी सोचा है कि इससे किसानों की रोटी-रोजी छिन जाएगी। वे भूखों मरने को विवश हो जाएँगे।
अमन – सुना है कि सरकार परिवार के किसी एक व्यक्ति को नौकरी देती है।
श्याम – एक व्यक्ति के नौकरी के बदले सोना उगलने वाली ज़मीन पर फैक्ट्री लगाना ठीक नहीं है। इससे लाभ कम नुकसान अधिक है।
अमन – वह कैसे?
श्याम – फैक्ट्रियाँ लगाने से हरियाली नष्ट तो होगी ही साथ ही पर्यावरण भी प्रदूषित होगा, जिसका दुष्प्रभाव दूरगामी होता है।
अमन – इसका उपाय क्या है?
श्याम – इसका एक विकल्प यह है कि इन फैक्ट्रियों को ऐसी जगह पर स्थापित किया जाए जहाँ की भूमि पथरीली या ऊसर हो।
अमन – इस विषय पर सरकार को विचार करना चाहिए।
श्याम – हाँ, इससे हमारा पर्यावरण संतुलित रह सकेगा और खाद्यान्न भी मिलता रहेगा।

- **गतिविधि-** राजा अकबर का चित्र बनाए अथवा लगाए |

पाठ 15
सूरदास के पद

➢ सूरदास के पद पाठ प्रवेश

सूरदास जी भक्ति काल की कृष्ण भक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। उनकी अधिकतर रचनाएँ भक्ति पर आधारित हैं। इन पदों में कवि ने बाल कृष्ण की अद्भुत लीलाओं का मनोहारी चित्र प्रस्तुत किया है। यहाँ कवि ने वात्सल्य रस की सुन्दर अभिव्यक्ति की है। किस तरह माता यशोदा अपने लला का पालन-पोषण करती हैं और किस तरह से गोंपियाँ शिकायत लेकर आती हैं? सूरदास जी के इस पद में कृष्ण के बालपन और उनकी मैया के साथ उनका कैसा नाता था और गोपियों के साथ वह किस तरह से शरारतें करते थे यही सब बताया गया है। बालक श्री कृष्ण का अपनी माँ से शिकायत करना बड़े सुन्दर ढंग से बताया गया है तथा गोपियों का यशोदा से शिकायत करना कि उनका लला बहुत शैतानी करता है, बहुत शरारत करता है, फिर भी अनोखा है, सबसे अच्छा है, अदभूद है, सबको प्यारा लगता है। सूरदास ने गोपियों का कृष्ण से दूर ना जाने का भाव दर्शाया है। सूरदास ने अपने इन पदों में गोपियों से कृष्ण से बिछड़ जाना और उनका विरह में तड़पना बहुत ही सुन्दर तरीके से दर्शाया है।

➢ नए शब्द

1) कबहिं
2) पियत
3) अजहूँ
4) काढ़त
5) काचौ
6) पियावति
7) किवारि
8) पैठि
9) सखनि

➢ शब्दार्थ

1) कबहिं – कब
2) किती – कितनी
3) पियत – पिलाना
4) अजहूँ – आज भी
5) बल – बलराम
6) बेनी – चोटी
7) लाँबी-मोटी – लंबी-मोटी
8) काढ़त – बाल बनाना
9) गुहत – गूँथना
10) न्हवावत – नहलाना
11) पियावति – पिलाती
12) किवारि – दरवाजा
13) पैठि – घुसकर
14) सींके – छिका
15) ढोटा – लड़का
16) जायौ – जन्म देना

➢ अतिलघु प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1 – बालक कृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?

उत्तर – यशोदा माँ बालक कृष्ण को लोभ देती थी कि यदि वह नियम से प्रतिदिन दूध पीएँगे तो उनकी चोटी भाई बलराम की तरह लंबी और मोटी हो जाएगी। कृष्ण अपने बाल बढ़ाना चाहते थे इसलिए वह ना चाहते हुए भी दूध पीने के लिए तैयार हो गए।

प्रश्न 2 – कृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या-क्या सोच रहे थे?

उत्तर – कृष्ण अपनी चोटी के बारे में सोचते थे कि उनकी चोटी भी दूध पीने से बलराम भैया के जैसी लंबी-मोटी हो जाएगी। माता यशोदा हर रोज उन्हें पीने को दूध देती थी, फिर भी उनकी चोटी बढ़ नहीं रही थी।

प्रश्न 3 – दूध की तुलना में कृष्ण कौन-सा पदार्थ अधिक पसंद करते थे?

उत्तर – कृष्ण अपनी माँ के कहने पर दूध पीते थे परंतु उन्हें दूध पीना ज़रा भी पसंद नहीं था। दूध पीने की जगह मक्खन और रोटी खाना पसंद करते थे। माँ के बार-बार दूध पिलाने के कारण वह मक्खन और रोटी नहीं खा पाते थे।

प्रश्न 4 – "तैं ही पूत अनोखौ जायौ" पंक्ति में ग्वालन के मन के कौन से भाव मुखरित हो रहे हैं?

उत्तर – ये शब्द ग्वालन ने यशोदा से कहे। वह शिकायत करती हुई कहती है कि नटखट कृष्ण प्रतिदिन उनके घर से मक्खन चोरी करके खा जाते हैं। वह यशोदा से कहती हैं कि उन्होंने अनोखे पुत्र को जन्म दिया है जो दूसरों से अलग हैं।

➢ लघु प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1 – मक्खन चुराते समय कृष्ण थोड़ा सा मक्खन बिखरा क्यों देते हैं?

उत्तर – श्री कृष्ण बहुत छोटे थे और छींका बहुत ऊँचा था। जब वह छींका से मक्खन चोरी करते थे तो थोड़ा मक्खन इधर-उधर बिखर जाता था क्योंकि उनका हाथ छींके तक नही पहुँच पाता था। कृष्ण ऐसा जान-बूझकर भी करते थे ताकि उनकी चोरी पकड़ी जाए

और माँ उनसे नाराज़ हो जाए तथा माँ को मनाने का अवसर मिले।

➢ दीर्घ प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न-1 द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा मार्ग में क्या-क्या सोचते जा रहे थे? वह कृष्ण के व्यवहार से क्यों खीझ रहे थे? सुदामा के मन की दुविधा को अपने शब्दों में प्रकट कीजिए।

उत्तर – सुदामा जिस उम्मीद से कृष्ण से मिलने गये थे, उसका कुछ भी नहीं हुआ। कृष्ण के पास से वे खाली हाथ लौट रहे थे। लौटते समय सुदामा थोड़े खिन्न भी थे और सोच रहे थे कि कृष्ण को समझना मुश्किल है। एक तरफ तो उसने इतना सम्मान दिया और दूसरी ओर मुझे खाली हाथ लौटा दिया। मैं तो जाना भी नहीं चाहता था, लेकिन पत्नी ने मुझे जबरदस्ती कृष्ण से मिलने भेज दिया था। जो अपने बचपन में थोड़े से मक्खन के लिए घर-घर भटकता था उससे कोई उम्मीद करना ही बेकार है।

व्याकरण विभाग

लोकोक्तियाँ

1. **अधजल गगरी छलकत जाए (कम जानने वाला व्यक्ति अधिक दिखावा करता है।)**
   समीर को चपरासी की सरकारी नौकरी क्या मिल गई, पूरे गाँव में किसी से सीधे मुँह बात नहीं करता। इसे कहते हैं – अधजल गगरी छलकत जाए।
2. **आम के आम गुठलियों के दाम (दोहरा लाभ)**
   मैं परीक्षा देने दिल्ली जा रही हूँ। लाल-किला और इंडिया गेट देख लँगी। इसे कहते हैं आम के आम गुठलियों के दाम।
3. **अंधों में काना राजा (मूर्खा में थोड़ा जानने वाला व्यक्ति भी आदर पा जाता है।)**
   पूरे गाँव में मदनलाल,ही आठवीं पास है। गाँव वाले उसे विद्वान समझकर उसका आदर करते हैं। इसी को कहते हैं अंधों में काना राजा।।
4. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता (अकेला आदमी कुछ नहीं कर सकता)**
   सामाजिक बुराईयों से लड़ने के लिए हमें सबको एक साथ होकर लड़ाई लड़नी होगी। आपने सुना ही होगा कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
5. **अपना हाथ जगन्नाथ (परिश्रम से ही सफलता मिलती है।)**
   दूसरों की कृपा पर जिंदा रहने से तो अच्छा है, परिश्रम करके खाओ, क्योंकि अपना हाथ जगन्नाथ।
6. **उलटा चोर कोतवाल को डाँटे-(अपराध करने वाला उलटी धौंस जमाए)**
   बबीत ने मेरा कॉपी चुरा लिया। उससे पूछा तो लड़ने लगा। इसी को कहते हैं – उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।।
7. **एक अनार सौ बीमार-(एक वस्तु के अनेक चाहने वाले)**
   नौकरी में पाँच पद के लिए पचास हजार आवेदन पत्र देखकर एक अनार सौ बीमार वाली कहावत चरितार्थ होती है।
8. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया-(अधिक परिश्रम करने पर कम लाभ)**
   पूरे वर्ष कठिन परिश्रम करने के बाद जब मंथन कक्षा में 25 प्रतिशत अंक ला पाया, तो उसके मुँह से यही निकला खोदा पहाड़, निकली चुहिया।
9. **ऊँची दुकान फीके पकवान**-प्रसिद्धि के अनुरूप गुणों का न होना
   हमने तो इस दुकान का नाम सुनकर इससे सामान खरीदा था, पर वह बहुत ही घटिया निकला। इसे कहते हैं ऊँची दुकान फीके पकवान।
10. **दूध का दूध पानी का पानी (स्पष्ट न्याय करना)**
    राजा विक्रमादित्य दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया करते थे।

लेखन विभाग
अनुच्छेद लेखन

भ्रष्टाचार

एक समय था जब भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था लेकिन आज यह स्थिति है कि भारत आर्थिक रूप से इतना पिछड़ रहा है कि सिवाय उस पर तरस खाने के और कुछ शेष नहीं रह गया है। स्वतंत्रता से पूर्व हमने देश से गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, अन्याय, धनी-निर्धन के मध्य की चौड़ी खाई आदि को मिटाने की जो कल्पनाएँ की थी, भ्रष्टाचार रूपी दैत्य ने उनमें से हमारा कोई भी स्वप्न सत्य सिद्ध नहीं होने दिया है। हमारे देश में कभी-भी न तो उत्तम साधनों का अभाव रहा है और न ही उच्चकोटि के नेता या समाज-सुधारकों का, फिर भी संसार के समृद्ध राष्ट्रों की तुलना में हमारा स्थान कहीं भी नहीं है। इसका मुख्य कारण सभी क्षेत्रों में बढ़ता भ्रष्टाचार है।खाद्य पदार्थों में मिलावट और अपने मुनाफे के लिए जी भरकर कर रहे गलत कार्यों को करने वालों की कोई कमी नहीं है। सरकारी विभागों में, विशेषकर पुलिस और कचहरियों में व्याप्त भ्रष्टाचार के विषय में यदि लिखने बैठा जाए तो आँखें शर्म से नीची हो जाएँगी। इसका मुख्य कारण हमारे देश के कर्णधार नेताओं को कहना गलत न होगा। मंत्री पद की कुरसी पाने की भूख राजनीतिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार को जन्म दे रही है। देखा जाए तो ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा है जहाँ भ्रष्टाचार के कदम न पहुँचे हों। आज आम आदमी पिसता चला जा रहा है।बढ़ती महँगाई ने उसकी कमर तोड़ दी है और उस पर हर एक काम के लिए रिश्वत की बढ़ती रकम ने उसकी उन्नति की हर राह को रोक दिया है। आवश्यकता है ऐसे सच्चे और अच्छे कर्णधारों की जो अपने कंधे पर देश की जिम्मेदारी को लेकर आगे बढ़ें और भ्रष्टाचार को जड़ से समाप्त करें।

- **गतिविधि-**श्री कृष्ण का चित्र बनाए अथवा लगाए |

>>>